हिन्दी - पुष्प

(साउथ एशिया टाइम्स का हिन्दी परिशिष्ट)

वर्ष-६ अङ्क-६ जनवरी, २०१०

सम्पादकीय

नया वर्ष और ऑस्ट्रेलिया में हो रहे अपराधों के शिकार भारतीय

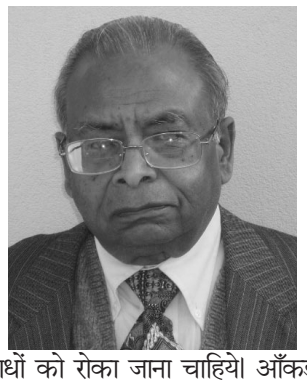

हिन्दी पुष्प के २००८ नवम्बर-दिसम्बर अङ्कों में हम ने अंतर्राष्ट्रीय भारतीय विद्यार्थियों पर दो भागों में एक लेख प्रकाशित किया था जिसके अंत में आशा व्यक्त की गयी थी कि भविष्य में इन विद्यार्थियों को जातिवाद, हिंसा, अकेलापन तथा अनुपयुक्त आवास तथा असुरक्षा की समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। परंतु इस आशा के विपरीत, २०१० के आरम्भ में कई मामले सामने आये हैं, जिन में न केवल भारतीय विद्यार्थी बल्कि ऑस्ट्रेलिया में कई वर्षों से रह रहे आप्रवासी भारतीय भी अपराधों के शिकार हुए हैं। इन में २१ वर्षीय युवक 'नितिन गर्ग' का नाम सबसे अधिक सुर्खियों में रहा है, जिस की हत्या कर दी गयी और हत्यारो का पुलिस को अभी तक कोई सुराग नहीं मिला है। कुछ ही दिनों बाद एक अन्य भारतीय युवक और उस की कार को पेट्रोल छिड़क कर जला दिया गया। एक और समाचार में सिडनी के कूज़ी समुद्र-तट पर एक अन्य भारतीय युवक को कुछ गौरांग व्यक्तियों ने बुरी तरह मारा-पीटा। पुलिस के अनुसार ये अपराध अवसरवादी हैं न कि नस्लवादी। सच चाहे कुछ भी हो, बढ़ते हुए इन अपराधों को रोका जाना चाहिये। आँकड़ों के अनुसार, अभारतीय व्यक्तियों की तुलना में भारतीयों पर अपराधी तत्वों द्वारा हमला होने की संभावना २० प्रतिशत अधिक है। ऐसा क्यों है? इस के कारणों का अध्ययन किया जाना चाहिये और पुलिस को इन्हें रोकने के लिये सकारात्मक क़दम उठाने चाहिये। अब समय आ गया है, जब ऑस्ट्रेलिया में भारतीय संगठनों को मिल कर यह माँग करनी चाहिये कि भारतीयों पर बढ़ते हुए आक्रमण रोके जायें। इस विषय पर आपके क्या विचार हैं, लिखियेगा।

हिन्दी-पुष्प के इस अङ्क में उपरोक्त विषय पर एक कविता तथा पत्र के अतिरिक्त नव-वर्ष से सम्बन्धित कविताएँ हैं। इसके अतिरिक्त और 'पदोन्नति' नामक कहानी का दूसरा भाग है। साथ में 'अब हँसने की बारी है' तथा सूचनाएँ स्तम्भ भी हैं। आशा है आपको यह अङ्क पसंद आएगा। आपके विचारों, सुझावों तथा रचनाओं का हम स्वागत करेंगे।

-दिनेश श्रीवास्तव

लेखकों से निवेदन

१. कृपया अपनी रचनाएँ (कहानियाँ, कविताएँ, लेख, चुटकुले, मनोरंजक अनुभव आदि) निम्नलिखित पते पर भेजे -

डा० दिनेश श्रीवास्तव, १४१ हायट स्ट्रीट. रिचमंड, विक्टोरिया ३१२१

(Dr. Dinesh Srivastava, 141 Highett Street, Richmond, Victoria 3121)

२. हस्तलिखित रचनाएँ स्वीकार की जाएँगी परन्तु इलेक्ट्रानिक रूप से हिन्दी-संस्कृत फ़ांट मे रचनाएँ भेजे तो उनका प्रकाशन हमारे लिए अधिक सुविधाजनक होगा।

ई-मेल से रचनाएँ भेजने का पता है-

dsrivastava@optusnet.com.au

३. अपनी रचनाएँ भेजते समय अपनी रचना की एक प्रतिलिपि अपने पास अवश्य रखे।

काव्य-कुंज

नव-वर्ष

-रचना श्रीवास्तव, अमेरिका

आंगन बहे, कुसुमित बयार
ऋतुएँ करे तेरे गीत से श्रंगार
सूर्य किरण चौखट पर
आशा के दीप जलाएँ
नूतन वर्ष की मंगल कामनाएँ

मिलन सुर से सजा गीत हो
पास सभी के उनका मीत हो
स्नेह जल सब दिल बरसाएँ
नूतन वर्ष की मंगल कामनाएँ
मात-पिता का आशीष फले
डाली-डाली उम्मीद खिले
खुशियाँ आयें, मन हर्षायें
नूतन वर्ष की मंगल कामनाएँ

बुराइयो बनी रहे दूरी
तेरी हर अभिलाषा हो पूरी
सफलता की बूंदें, बादल बरसायें
नूतन वर्ष की मंगल कामनाएँ

मनुष्य से हो प्रेम, धर्म, जाति से नहीं
कर्म से हो मतलब, ख्याति से नहीं
हँसें हम जब पड़ोसी भी मुस्काएँ
नूतन वर्ष की मंगल कामनाएँ

आज मैं पीटा नहीं, मारा गया हूँ

- अब्बास रज़ा अलवी, सिडनी

मैं पीटा गया, तुम देखते रहे
ख़बरों की सुर्खियों में, तुम पढ़ते रहे
कम्प्यूटर की ई-मेल में तुम भेजते रहे
टी०वी० तथा रेडियो पर तुम सुनते रहे
मैं बार-बार पीटा गया, तुम देखते रहे

तरस तो आया तुम्हें कि
मैं तुम्हारे देश से हूँ
दिल में तो आया तुम्हारे कि
मैं तुम जैसा हूँ
मगर व्यस्त ज़िन्दगी की
दौड़-भाग में, 'रैट-रेस' में
तुम ने मुझे भुला दिया
आज मैं पीटा नहीं, मारा गया हूँ
मैं एक विद्यार्थी ही नहीं,
तुम्हारे जैसा ऑस्ट्रेलिया का
स्थायी निवासी हूँ
तुम मेरे देश से ही नहीं
इस देश के नागरिक भी हो
और भारतीय समुदाय के
वरिष्ठ सदस्य हो

आज मेरी हत्या हुई है,
कल तुम्हारी भी हो सकती है
तुम कुछ करो और इसे रोको
आज मैं पीटा नहीं, मारा गया हूँ

एक और नव-वर्ष

- आशीष जैन, मेल्बर्न

नव-उम्मीदें, नव-आशाएँ,
नव-जीवन का हर्ष
द्वार तुम्हारे दस्तक देता
एक और नव-वर्ष!

अब तक हम ने क्या-क्या खोया,
कब-कब जाने कितना रोया,
भूलो सारे दुइस्वप्नों को,
भरो हृदय में उत्कर्ष
द्वार तुम्हारे दस्तक देता
एक और नव-वर्ष!

आओ, आगे बढ़ते जाएँ,
अपने लक्ष्यों को हम पाएँ,
एक-एक पल को जी लें
और न करें समय को व्यर्थ
द्वार तुम्हारे दस्तक देता
एक और नव-वर्ष

धर्म-अहिंसा की राह चलें हम,
सुख-शांति गूँजे जग में,
कुछ ऐसा हो यह वर्ष
द्वार तुम्हारे दस्तक देता
एक और नव-वर्ष

नव-उम्मीदें, नव-आशाएँ,
नव-जीवन का हर्ष
द्वार तुम्हारे दस्तक देता
एक और नव-वर्ष!

चाहत तुम्हारे मिलन की

- इन्दुमती पाण्डेय, मेल्बर्न

तेरे बिना दिलदार,
न कटती यह ज़िन्दगी
चाहत तुम्हारे मिलन की,
न कोई बन्दगी॥

इस दिल के आइने में श्याम,
अक्स तुम्हारी
हर सांस, वह धड़कन में है,
एहसास तुम्हारी
बस एक है अर्ज़ी मेरी,
तुम सामने आओ
तुम से नज़र मिलाके,
हो मदहोश ज़िन्दगी॥
चाहत तुम्हारे.....

दिन रात मेरे दिल में
बसी है खुदी तेरी
दिल ने किया है मजबूर है,
ये आशिकी तेरी
मेरा है क्या क़सूर, तेरे नूर की क़सम
मैं तो हूँ बेक़सूर, तेरी याद ज़िन्दगी॥
चाहत तुम्हारे.....

घुंघराली ज़ुल्फ़ की
अदा को सामने लाओ
बदली हटा लो,
श्याम घटा बन के छा जाओ
वह साँवरी सूरत तेरी, वो तिरछी अदाएँ
यह दिल है बेक़रार, करूँ कैसे बन्दगी॥
चाहत तुम्हारे.....

क्यों हमको
तड़पने को है मज़बूर बनाया
परदा क्यों उठाया नहीं,
सूरत को छिपाया
जलवा ग़ज़ब का है,
करूँ कैसे तलाश
निकले हैं ढूँढ़ने को,
खुद ही अपनी ज़िन्दगी
चाहत तुम्हारे.....

सम्पादक के नाम पत्र

सम्पादक महोदय,
नितिन गर्ग के हादसे ने भारत ही नहीं, विक्टोरिया सरकार को भी हिलाकर रख दिया है। दोनों देशों के मीडिया अपने अपने नज़रिये से इस घटनाक्रम को हवा दे रहे है। इनमें से कोई भी यह नहीं सोचता कि विक्टोरिया अथवा ऑस्ट्रेलिया के अन्य राज्यों में आ बसे भारतीय मूल के लोगों की क्या सोच है। मेरी समझ में यह प्रश्न नस्लवादका नहीं, बल्कि कानून और व्यवस्था का है। भारत और ऑस्ट्रेलिया की सरकारें परस्पर सहयोग एवम् समझदारी से काम लेते हुए दोनो देशों के रिश्तों को बिगड़ने से रोक सकती हैं। बेहतर होगा कि भारत सरकार, वहाँ का मीडिया व जनता समूचे घटनाक्रम को नस्लवादी जामा न पहनाए बल्कि कूटनीतिक स्तर पर ऑस्ट्रेलिया की सरकार को ठोस कार्रवाई करने को मज़बूर करे। इधर ऑस्ट्रेलियाई सरकार भी अपने खुफ़िया तन्त्र को चुस्त, दुरुस्त करते हुए उन निहित स्वार्थी तत्वों का पर्दाफ़ाश करे जो इस तरह की जुनूनी हरकतें करते हुए इस शांतिप्रिय देश को बदनाम करते रहे हैं। इस सम्बन्ध में मैं अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति का परिचय देते हुए यहाँ की सरकार को न केवल अपने खुफ़िया तन्त्र को चुस्त दुरुस्त करना होगा बल्कि तत्सम्बन्धित क़ायदे कानून के दाँत भी मज़बूत करने होंगे। इस हेतु यदि भारत सरकार, जिसे असामाजिक तत्वों से निपटने का दीर्घकालीन अनुभव रहा है, से सहयोग भी लेना पड़े तो कोई हिचक नहीं होनी चाहिए। यदि कोई व्यक्ति या समुदाय विशेष, ग़रीबी या बेरोज़गारी की मार झेलते हुए, नशीले पदार्थों का सेवन करता है तो उसका सामाजिक, आर्थिक हल निकालना सरकार का काम है। क़ानून को अपने हाथ में लेने का हक़ किसी को नहीं होना चाहिए। आख़िर यह कॉमनवेल्थ ऑफ़ ऑस्ट्रेलिया के आत्म सम्मान और प्रतिष्ठा का प्रश्न है जिससे खिलवाड़ नहीं किया जाना चाहिये।
फिर भी सारा दोष सिर्फ़ विक्टोरिया की सरकार पर डाल देना भी ग़लत होगा। भारतीय छात्र भी खुद मुसीबत मोल लेते हैं। अति संवेदनशील इलाक़ों में रहना, ज़ोर-ज़ोर से अपनी भाषा में बातें करना, रात की पाली में काम करना, देर रात को सुनसान जगहों में आवश्यकता से कहीं अधिक पैसे व बेशकीमती सामान लेकर आना-जाना अंतत: जानलेवा साबित हो सकते है।
- रमेश दवे, मेल्बर्न

बधाई हो

'हिन्दी-निकेतन' के भूतपूर्व सभापति तथा प्रथम कार्यकारिणी के सदस्य, प्रोफ़ेसर अरुण कुमार तथा उनकी पत्नी, मधु कुमार को उनके विवाह की ४०वीं वर्षगाँठ पर हिन्दी-पुष्प परिवार की और से बहुत-बहुत बधाई हो। स्मरणीय है कि प्रोफ़ेसर अरुण कुमार के सभापतित्व-काल में ही प्रसिद्ध फ़िल्म-तारिका शबाना आज़मी

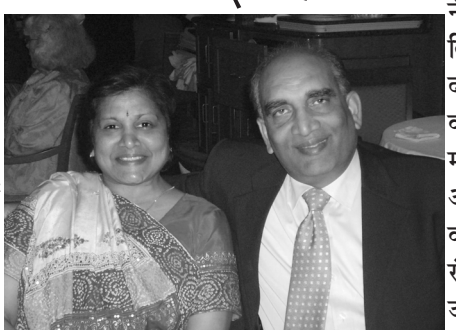

ने हिन्दी-निकेतन के मंच पर भाषण दिया था और उन्हीं के सभापतित्व के दौरान ही वी०सी०ई० हिन्दी समारोह कार्यक्रम का श्रीगणेश हुआ था। श्रीमती मधु कुमार एक आदर्श गृहिणी हैं। अपनी नौकरी से अवकाश प्राप्त करने के पश्चात् ,उन्होंने चित्रकारी तथा रंगसाज़ी का शौक़ अपनाया है और उसमें अपूर्व दक्षता प्राप्त की है।

कहानी

पदोन्नति* (भाग २)

-श्रीनिवास वत्स

(आपने पिछले अंक में पढ़ा कि सुनन्दन बाबू और उनका परिवार हिंदी अनुवादक के पद से राजपत्रित हिंदी अधिकारी की उनकी पदोन्नति से बहुत प्रसन्न थे। पड़ोसियों की टीका-टिप्पणी से परेशान सुनन्दन बाबू की पत्नी सुभद्रा ने पड़ोसियों को अगले महीने के पहले रविवार को आमंत्रित कर दिया। शीघ्र ही घर के पर्दे बदल गए और सुनन्दन जी ने अपने लिए एक पतलून और दो नई कमीजें सिलाई। असली महँगाई का आभास तो तब हुआ जब एक टी-सेट और मेज़पोश ख़रीदने में तीन सौ सत्तर रुपये लग गए। पर विवशता थी, क्या करें? अफ़सर हो गए तो अन्य कोई-न-कोई सहकर्मी अफसर भी घर पर आ सकता है। जब वे किसी के यहां जाएंगें तो उन्हें भी दूसरों को बुलाना पड़ेगा। लीजिये अब पढ़िये आगे की कहानी -सम्पादक)

सुनन्दन जी की इकलौती बहन की चिट्ठी आई थी, लिखा था- 'भैया अफसर हो गए हैं, बधाई हो! अबकी बार राखी पर बनारसी साड़ी से कम न लूंगी।'
सायंकाल बैठक में यह फ़ैसला हुआ कि घर में स्कूटर भी होना चाहिए। सुनन्दन जी ने दफ्तर से स्कूटर एडवांस के लिए आवेदन किया। पैसे मिलने में कोई विशेष कठिनाई नहीं आई। लेकिन स्कूटर आने तक घर में हर रोज़ इसी बात पर चर्चा होती कि स्कूटर आने वाला है। बड़ी लड़की रजनी खुश थी कि वह उसे यूनिवर्सिटी ले जाएगी। उसकी सहेलियाँ प्रायइ मोपेड पर आती हैं।
जब वह स्कूटर पर जाएगी तो सखियों में उसका स्थान ऊंचा हो जाएगा।
बिट्टू बोल पड़ा- "अरी ! तू कैसे ले जाएगी? लड़कियाँ स्कूटर नहीं चलातीं। मैं तुझे यूनिवर्सिटी छोड़कर स्कूटर अपने कालेज ले जाऊँगा।"
छोटे लड़के ने बीच में टोका- "यह स्कूटर पापाजी को दफ्तर से मिला है। वे इसे अपने दफ्तर ले जाएँगे। तुम क्यों मुँह धोए बैठे हो?"
सुनन्दन बाबू को मन-ही-मन स्कूटर की चर्चा अच्छी लग रही थी। पर सामान्य-सा बड़प्पन दशति हुए बोले- "अरे तुम छोटी-छोटी बातों पर क्यों लड़ते रहते हो? हम तुम दोनों के लिए एक-एक स्कूटर और ला देगें।"
सब बच्चों के चेहरों की मुस्कराहट देखते बनती थी। छोटा राजू बबली के कान में फुसफसाया- "अब पापा अफ़सर हो गए हैं। हमारे घर में किसी चीज़ की कमी नहीं रहेगी।"
बबली बोली- "स्कूटर पर मम्मी-पापा घूमने जाएंगे।"

अगले महीने जब घर में सचमुच स्कूटर आ गया तो सब उसके चारों ओर झूम गये। हाथ लगा-लगा कर देख रहे थे और एक-दूसरे को टोक रहे थे कि हाथ न लगाओ, मैला हो जाएगा। बड़ा लड़का एक कपड़ा उठा लाया और उसे साफ करने लगा।
रजनी बोली-"अरे इतनी ज़ोर से न रगड़ो, रंग उतर जायेगा। इस पर अभी मैल जमा ही कहाँ है?"
तिवारी जी ने दरवाजे पर दस्तक दी तो स्वयं सुनन्दनजी ने गर्व से दरवाजा खोला और बोल पड़े-"आइए तिवारी जी! देखिए कैसा रहेगा?"
"अरे वाह! बहुत खूब! आज तो इसी बात पर मुँह मीठा हो जाए!"
श्रीमती सुभद्रा ने चाय का कप तिवारी जी को थमाया और बर्फियों का डिब्बा आगे बढ़ा दिया।
जब तक चाय का दौर चला, सुनन्दनजी ने स्कूटर के अतिरिक्त किसी और विषय पर चर्चा ही नहीं चलने दी।
शहर के प्रतिष्ठित लायंस क्लब की सदस्यता के लिये सुनन्दनजी ने आवेदन कर दिया। वे उच्च अधिकारियों की मानसिकता को समझने का प्रयास कर रहे थे ताकि उसी मनोविज्ञान के आधार पर अपने को विकसित कर सकें।
सात बजे सो कर उठने वाले सुनन्दन जी छह बजे उठकर सैर के लिए जाने लगे। हाथ में लकड़ी का रूल थामे वे पिछली गली से निकलकर महावीर पार्क में पहुंच जाते, जहाँ शहर के प्रतिष्ठित व्यक्ति एकत्र होते थे। रिटायर्ड मेजर कृष्णामूर्ति अपने कुत्ते के साथ पार्क के चक्कर काटता मिलता। सरोधा जी फाइनेंस कम्पनी में उपप्रबंधक हैं, वे भी अपने पिल्ले को लेकर सुबह-सुबह ही पार्क में पहुँच जाते।
सुनन्दनजी ने अपना परिचय दिया कि वे केन्द्रीय सरकार में अधिकारी हैं। शेष व्यक्तियों ने उनका प्रसन्नतापूर्वक स्वागत किया और पूछा, "आप कहाँ रहते हैं?"
सुनन्दन ने उन्हें बताया।
"अच्छा! छुट्टी वाले दिन हम आपके घर जाएँगे।" मेजर बोला।
"क्यों नहीं- क्यों नहीं!" सुनन्दन बाबू ने मुस्कराकर निमंत्रण दिया। **(क्रमश:)**
***भारत-संदर्श के सौजन्य से**

महत्वपूर्ण तिथियाँ

१४ जनवरी (मकर संक्रांति/लोढ़ी/पोंगल), १७ जनवरी (विश्व-धर्म दिवस), २० जनवरी (वसंत-पंचमी), २६ जनवरी (भारतीय गणतंत्र-दिवस / आस्ट्रेलिया-दिवस), १२ फ़रवरी (महाशिबरात्रि), २८ फ़रवरी (होली)।

सूचनाएँ

१. **साहित्य-संध्या** - अपने लोग, अपनी बातें (शनिवार, २३ जनवरी)
स्थान - फ़िलिस होर रूम, क्यू सिटी लाइब्रेरी, कोथम रोड और सिविक ड्राइव के नुक्कड़ पर क्यू-३१०१ (मेलवे संदर्भ ४५ डी-६)
समय - रात के ७.३० बजे से १०.३० बजे तक। प्रवेश नि:शुल्क है।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क कीजिये - नलिन शारदा (०४०२)१०८५१२
पिछली साहित्य-संध्या की फोटुओं तथा 'हिन्दी-पुष्प' के पुराने अंकों के लिये, निम्नलिखित वेबसाइट देखिये - http://sahityasangam.weebly.com/index.html

२. 'एड' व 'शारदा कला केन्द्र' द्वारा 'एड' की सहायता में प्रस्तुत पुणे की **मंजरी अलगांवकर का शास्त्रीय तथा अर्ध-शास्त्रीय गायिकी का कार्यक्रम**
स्थान - ब्रेन्डन पार्क प्राइमरी स्कूल, कूटामुन्ड्रा ड्राइव, ह्वीलर्स हिल (मेलवे संदर्भ ७१ ई-११) कार पार्क करने के लिये, निनेवाह क्रिसेन्ट द्वारा प्रवेश करें।
तिथि व समय - रविवार, २४ जनवरी दोपहर ४ बजे से आरम्भ।
अधिक जानकारी के लिए राधेश्याम गुप्ता से (०४०२) ०७४ २०८ पर सम्पर्क कीजिये।

३. **हिन्दी-निकेतन मना रहा है भारतीय गणतंत्र-दिवस व ऑस्ट्रेलिया-दिवस**
स्थान - जेल्स् पार्क साउथ, ग्लेन वेवर्ली (मेलवे संदर्भ ७२ बी-९)
तिथि तथा समय - रविवार, २६ जनवरी, दिन के ११.३० बजे से शाम के ५.३० बजे तक
कार्यक्रम में खेल-प्रतियोगताएँ तथा मनोरंजक तथा मुफ़्त दोपहर का भोजन शामिल हैं
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क कीजिये - डा० शरद गुप्ता (०३) ९७५३ ३४१२

४. **'नादर्न रीजन इण्डियन सीनियर्स एसोसिएशन'मना रहा है-भारतीय गणतंत्र-दिवस व ऑस्ट्रेलिया-दिवस**
स्थान - कम्युनिटी हॉल, १८ ए बेन्ट स्ट्रीट, नार्थकोट, विक्टोरिया (मेलवे संदर्भ ३० एफ़-७)
तिथि तथा समय - रविवार, ३१ जनवरी, दिन के ११ बजे से प्रारम्भ
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क कीजिये - संतोष कुमार (०४११ १३६ ६१२), नलिन शारदा (०४०२)१०८५१२ या राजेन्द्र चोपड़ा (०४०१ ६८१ ३३००

अब हँसने की बारी है

१. विवाह की ४०वीं वर्षगाँठ पर परी का वरदान

एक दंपति अपने विवाह की ४०वीं वर्षगाँठ मना रहे थे। संयोग से उस दिन पत्नी का ६०वाँ जन्मदिन भी था। उस रात उनके घर में एक परी प्रकट हुई। उसने उन दोनों से कहा कि वे दोनों इतने लम्बे समय से बड़े प्यार से रह रहे हैं, जिस से वह बहुत खुश है। परी ने कहा कि वे उस से एक-एक वरदान माँग सकते हैं। पत्नी जो अपने पति से बहुत प्यार करती थी, ने परी से कहा कि वह अपने पति के साथ सभी मनोहर जगहों की सैर करना चाहती है पर उसके पास इतने पैसे नहीं हैं। परी ने अपनी जादू की छड़ी घुमाई और पत्नी के हाथ में वायुयान द्वारा यात्रा करने के टिकटों का एक लिफ़ाफ़ा आ गया। अब वरदान माँगने की बारी पति की थी। पति ने एक मिनट सोचा, फिर बोला - "ईमानदारी से कहूँ, तो मैं अपने लिये अपने से ३० साल छोटी पत्नी चाहता हूँ। परी ने अपनी जादुई छड़ी घुमाई और पति महोदय तुरंत ९० साल के हो गये।